©cc-by-nc-sa 2004-2024 Н.П.Лихушина
http://galenel.info/sanskrit/07-buddhist-sutra/lalitavistara-14-part-unit.pdf

Четыре встречи

Лалитавистара, глава 14 (отрывок)

ललितविस्तरः

१४ स्वप्नपरिवर्तश्चतुर्दशः।

इति हि भिक्षवो बोधिसत्त्वः संचोदितः सन् तेन देवपुत्रेण राज्ञः शुद्धोदनस्येमं स्वप्नमुपदर्शयति स्म यद्राजा शुद्धोदनः सुप्तः स्वप्नान्तरगतोऽद्राक्षीत् बोधिसत्त्वं रात्रौ प्रशान्तायामभिनिष्क्रमन्तं देवगणपरिवृतम्। अभिनिष्क्रम्य प्रव्रजितं चाद्राक्षीत् काषायवस्त्रप्रावृतम्।

kāṣāya - коричневый, красно-коричневый;

स प्रतिबुद्धः त्वरितं त्वरितं काञ्चुकीयं परिपृच्छति स्म कच्चित् कुमारोऽन्तःपुरेऽस्ति।

kāñcukīya *m buddh.* - евнух

antaḥpura (antaḥ-pura) *n* - женская половина дома, гарем; царский дворец;

सोऽवोचत् अस्ति देवेति॥

ततो राज्ञः शुद्धोदनस्यान्तःपुरे शोकशल्यो हृदयेऽनुप्रविष्टोऽभूत्

śalya *m* - острие, шип, колючка

अभिनिष्क्रमिष्यति अवश्यं कुमारोऽयम्।

यच्चेमानि पूर्वनिमित्तानि संदृश्यन्ते स्म॥

तस्यैतदभवत्-न खल्वव्ययं कुमारेण कदाचिदुद्यानभूमिमभिनिर्गन्तव्यम्।

avyayam *adv.* - постоянно, вечно;

स्त्रीगणमध्येऽभिरतः इहैव रम्यते नाभिनिष्क्रमिष्यतीति॥

ततो राज्ञा शुद्धोदनेन कुमारस्य परिभोगार्थं त्रयो यथर्तुकाः प्रासादाः कारिता अभूवन् ग्रैष्मिको वार्षिको हैमन्तिकश्च।

paribhoga *m* - наслаждение, чувственное удовольствие;

haimantika - зимний;

तत्र यो ग्रैष्मिकः स एकान्तशीतलः। यो वार्षिकः स साधारणः। यो हैमन्तिकः स स्वभावोष्णः।

ekānta *m* - уединенное место; одиночество, исключительность;

sādhāraṇa - общий, совместный; умеренный;

एकैकस्य च प्रासादस्य सोपानानि पञ्च पञ्च पुरुषशतान्युत्क्षिपन्ति स्म निक्षिपन्ति स्म।

sopāna *n* - лестница;

तेषां तथोत्क्षिप्यमाणानां निक्षिप्यमाणानां च शब्दोऽर्धयोजने श्रूयते स्म

yojana *n* - мера длины (*примерно 17 км*);

मा खलु कुमारोऽनभिज्ञात एवाभिनिष्क्रमिष्यतीति।

नैमित्तिकैर्वैपञ्चिकैश्च व्याकृतमभूत् मङ्गलद्वारेण कुमारोऽभिनिष्क्रमिष्यतीति।

naimittika *m* - пророк, прорицатель, провидец;

vaipañcika (vaipañcaka, vaipañcanika) *m buddh.* - предсказатель;

vy-ā√kar - разделять, объяснять; *buddh.* предсказывать, объяснять;

maṅgala *n* - хорошее предзнаменование, счастье, праздник;

ततो राजा मङ्गलद्वारस्य महान्ति कपाटानि कारयति स्म।

kapāṭa *n* - дверь, дверная панель;

एकैकं च कपाटं पञ्च पञ्च पुरुषशतान्युद्घाटयन्ति स्म, अपघाटयन्ति स्म। तेषां चार्धयोजनं शब्दो गच्छति स्म।

ud√ghāṭaya (*caus.*) - открывать, вскрывать;

apa√ghāṭaya (*caus.*) *buddh.* -закрывать, запирать;

पञ्च चास्य कामगुणान् सदृशानुपसंहरति स्म। गीतवादितनृत्यैश्चैनं सदैव युवतय उपतस्थुः॥

kāmaguṇa (kāma-guṇa) *buddh. m pl.* - качества желаний, объекты (пяти) чувств;
upasaṃ√har I P. - собирать, обеспечивать, снабжать;
vādita *n* - музыка, игра на музыкальных инструментах.

अथ भिक्षवो बोधिसत्त्वः सारथिं प्राह शीघ्रं सारथे रथं योजय।

sārathi *m* - возница;

उद्यानभूमिं गमिष्यामीति। ततः सारथी राजानं शुद्धोदनमुपसंक्रम्यैवमाह

देव कुमार उद्यानभूमिमभिनिर्यास्यतीति॥

अथ राज्ञः शुद्धोदनस्यैतदभवत् न कदाचिन्मया कुमार उद्यानभूमिमभिनिष्क्रमितः सुभूमिदर्शनाय।

यन्वहं कुमारमुद्यानभूमिमभिनिष्क्रामयेयम्।

ततः कुमारः स्त्रीगणपरिवृतो रतिं वेत्स्यते नाभिनिष्क्रमिष्यतीति॥

ततो राजा शुद्धोदनः स्नेहबहुमानाभ्यां बोधिसत्त्वस्य नगरे घण्टावघोषणां कारयति स्म

ghaṇṭā *f* - колокол;
avaghoṣaṇa *n buddh.* - провозглашение, сообщение, уведомление;

सप्तमे दिवसे कुमार उद्यानभूमिं निष्क्रमिष्यतीति (सुभूमिदर्शनाय)।

तत्र भवद्भिः सर्वामनापानि चापनयितव्यानि। मा कुमारः प्रतिकूलं पश्येत्।

manaāpa *buddh.* - пленяющий разум; очаровательный, прелестный;
pratikūla - противоположный, враждебный; неприятный, отталкивающий, вредный;

सर्वमनापानि चोपसंहर्तव्यानि विषयाभिरम्याणि॥

viṣaya *m* - предмет, объект материального мира, дисциплина (для изучения); *pl.* предметы наслаждения, удовольствия;
abhiramya - приятный, привлекательный;

ततः सप्तमे दिवसे सर्वं नगरमलंकृतमभूत्

उद्यानभूमिमुपशोभितं नानारङ्गदूष्यवितानीकृतं छत्रध्वजपताकासमलंकृतम्।

upaśobhita - украшенный;
raṅga *m* -цвет, краска;
dūṣya *n* - хлопчатобумажная ткань, одежда;
vitānī kar - затенять, натягивать (полог, навес);
patākā *f* - знамя, флаг, вымпел;

येन च मार्गेण बोधिसत्त्वोऽभिनिर्गच्छति स्म स मार्गः सिक्तः संमृष्टो गन्धोदकपरिषिक्तो मुक्तकुसुमावकीर्णो

नानागन्धघटिकानिर्धूपितः पूर्णकुम्भोपशोभितः कदलीवृक्षोच्छ्रितो नानाविचित्रपटवितानविततो

रत्नकिङ्किणीजालहारार्धहाराभिप्रलम्बितोऽभूत्।

saṃ√marj II P. - подметать, очищать (от грязи);
ghaṭikā *f buddh.* - палочка;
nirdhūpita - окуренный, ароматный, душистый, благоухающий;
kumbha *m* кувшин, горшок;
kadalī *f* - банан (Musa paradisiaca);
uc√chri (ut√śri) I U. возводить, сооружать, поднимать ;
paṭa *m* - ткань, материя, холст; одежда, платье;
vitāna *m, n* - балдахин, полог, навес, тент;
kiṅkiṇi *f* - маленький колокольчик;
hāra *m*, hārā *f* - нить жемчуга;
ardhahāra (ardha-hāra) *m* - ожерелье из сорока или шестидесяти четырех нитей;
pra√lamb I Ā. - свисать, висеть, спускаться;

चतुरङ्गसैन्यव्यूहितः परिवारश्चोद्युक्तोऽभूत् कुमारस्यान्तःपुरं प्रतिमण्डयितुम्।

caturaṅga - четырехчленный, о войске - полная армия, сост. из пехоты, конницы, слонов и колесниц;
vyūhita (p.p. от vy√ūh)- построенный в боевой порядок;
udyukta (p.p. от ud√yuj) - готовый, собранный;
pratimaṇḍaya *buddh.* - украшать;

अथ शुद्धावासकायिका देवा निध्यापयन्ति स्म बोधिसत्त्वमाहरितुम्

śuddhāvāsa, śuddhāvāsakāyika - боги Чистой обители, класс богов;
ni√dhyāpaya *buddh.* - давать понять;

तत्र बोधिसत्त्वस्य पूर्वेण नगरद्वारेणोद्यानभूमिमभिनिष्क्रामतो महता व्यूहेन अथ बोधिसत्त्वस्यानुभावेन शुद्धावासकायिकैर्देवपुत्रैस्तस्मिन् मार्गे पुरुषो जीर्णो वृद्धो महल्लको धमनीसंततगात्रः खण्डदन्तो वलीनिचितकायः पलितकेशः कुब्जो गोपानसीवक्रो विभग्नो दण्डपरायण आतुरो गतयौवनः खरखरावसक्तकण्ठः प्राग्भारेण कायेन दण्डमवष्टभ्य प्रवेपयमानः सर्वाङ्गप्रत्यङ्गैः पुरतो मार्गस्योपदर्शितोऽभूत्॥

vyūha *m* - *buddh.* проявление (*особенно* сверхъестественное), великолепие; приведение в порядок, украшение;
dhamanīsaṃtata (dhamanī-saṃtata) - с натянутыми венами, худой, истощенный;
khaṇḍa *m, n* - кусок, обломок;
valī *f* - морщина
nicita - полный, снабженный, изобилующий, покрытый ч.-л.;
palita *n* - проседь, седые волосы;
kubja - горбатый, кривой;
gopānasī *f* - стропила, каркас крыши (изогнутой формы);
parāyaṇa *n* - главная, высшая цель; последнее прибежище, последнее средство спасения;
ātura - болезненный, страдающий;
khara - резкий, грубый твердый;
rāva *m* - звук, крик, шум;
prāgbhāra *buddh.* - наклонный, склоненный;

अथ बोधिसत्त्वो जानन्नेव सारथिमिदमवोचत्

किं सारथे पुरुष दुर्बल अल्पस्थामो
उच्छुष्कमांसरुधिरत्वचस्नायुनद्धः।
श्वेतंशिरो विरलदन्त कृशाङ्गरूपो
आलम्ब्य दण्ड व्रजते असुखं स्खलन्तः॥१॥

virala - редкий, редко встречающийся; малый, пространный;
kṛśa худощавый, худой; тонкий, тощий, хилый, слабый; незначительный;
√skhal I P. - спотыкаться, ковылять, колыхаться;

सारथिराह

एषो हि देव पुरुषो जरयाभिभूतः
क्षीणेन्द्रियः सुदुखितो बलवीर्यहीनः।
बन्धूजनेन परिभूत अनाथभूतः
कार्यासमर्थ अपविद्धु वनेव दारु॥२॥

bandhujana *m* близкий человек; друг; родственник;
pari√bhū I P. - содержать, сопровождать, побеждать, охватывать; презирать, пренебрегать;
apaviddha - уведенный, удаленный, отверженный; вытолкнутый, пронзенный;

बोधिसत्त्व आह

कुलधर्म एष अयमस्य हितं भणाहि

अथवापि सर्वजगतोऽस्य इयं ह्यवस्था।
शीघ्रं भणाहि वचनं यथभूतमेतत्
श्रुत्वा तथार्थमिह योनिश चिन्तयिष्ये॥३॥

√bhaṇ I P. - говорить, звать, называть; излагать;
avasthā *f* - состояние, положение;

सारथिराह

नैतस्य देव कुलधर्म न राष्ट्रधर्मः
सर्वे जगस्य जर यौवनु धर्षयाति।
तुभ्यं पि मातृपितृबान्धवज्ञातिसंघो
जरया अमुक्त न हि अन्य गतिर्जनस्य॥४॥

√dharṣ X U. - обижать; подчинять, подавлять, завоевывать;
bāndhava *m* - родственник, друг;
jñāti *m* - родственник;

बोधिसत्त्व आह

धिक्सारथे अबुध बालजनस्य बुद्धिः
यद्यौवनेन मदमत्त जरां न पश्येत्।
आवर्तयाशु मि रथं पुनरहं प्रवेक्ष्ये
किं मह्य क्रीडरतिभिर्जरयाश्रितस्य॥५॥

अथ बोधिसत्त्वः प्रतिनिवर्त्य रथवरं पुनरपि पुरं प्राविशत्॥

इति हि भिक्षवो बोधिसत्त्वोऽपरेण कालसमयेन दक्षिणेन नगरद्वारेणोद्यानभूमिमभिनिष्क्रमन् महता व्यूहेन सोऽद्राक्षीन्मार्गे पुरुषं व्याधिस्पृष्टं दग्धोदराभिभूतं दुर्बलकायं स्वके मूत्रपुरीषे निमग्नमत्राणमप्रतिशरणं कृच्छ्रेणोच्छ्वसन्तं प्रश्वसन्तम्।

vyādhi *m* - болезнь;
mūtra *n* - моча;
purīṣa *n* - помет, испражнение;
ni√majj I P. (p.p. nimagna) - утопать, впадать во ч.-л.;
trāṇa *n* - защита;
uc√chvas (ud√śvas) II P. - вздыхать, выдыхать;
pra√śvas II P. - вдыхать;

दृष्ट्वा च पुनर्बोधिसत्त्वो जानन्नेव सारथिमिदमवोचत्

किं सारथे पुरुष रुष्यविवर्णगात्रः
सर्वेन्द्रियेभि विकलो गुरु प्रश्वसन्तः।
सर्वाङ्गशुष्क उदराकुल कृच्छ्रप्राप्तो
मूत्रे पुरीषि स्वकि तिष्ठति कुत्सनीये॥६॥

aruṣya - покрытый ранами или болячками;
vikala - неполный, испорченный, слабый, увечный;
kṛcchra - трудный, тяжкий, опасный, болезненный; *m, n* затруднение, опасность, зло, горе, боль;
ākula - смущенный, озабоченный, обеспокоенный;
√kuts I P., X P. - презирать, оскорблять, бранить; p.n. kutsanīya *buddh.* - отвратительный, неприятный, противный;

सारथिराह

एषो हि देव पुरुषो परमं गिलानो
व्याधीभयं उपगतो मरणान्तप्राप्तः।
आरोग्यतेजरहितो बलविप्रहीनो
अत्राणद्वीपशरणो ह्यपरायणश्च॥७॥

√glai (*или* glā, I P. glāyati; p.p. glāna, *buddh.* gilāna) - изнуряться; истощаться;
√rah (I P. rahati, p.p. rahita) отделять; *p.p.* лишенный, оставленный, свободный от ч.-л., без ч.-л.;
vipra√hā III P. (p.p. viprahīṇa) - покидать, оставлять;
dvīpa *m* - остров, континент; убежище, защита, покровительство;
parāyaṇa *n* - главная, высшая цель; последнее прибежище, последнее средство спасения;

बोधिसत्त्व आह

आरोग्यता च भवते यथ स्वप्नक्रीडा
व्याधीभयं च इममीदृशु घोररूपम्।
को नाम विज्ञपुरुषो इम दृष्ट्ववस्थां
क्रीडारतिं च जनयेच्छुभसंज्ञतां वा॥८॥

√janaya P. *buddh.* - постигать, понимать;
saṃjñā *f* - сознание, осознание; восприятие; память, чувства; представление, мысленный образ;

अथ खलु भिक्षवो बोधिसत्त्वः प्रतिनिवर्त्य रथवरं पुनरपि पुरवरं प्राविक्षत्॥

इति हि भिक्षवो बोधिसत्त्वोऽपरेण कालसमयेन पश्चिमेन नगरद्वारेणोद्यानभूमिमभिनिष्क्रमन् महता व्यूहेन सोऽद्राक्षीत् पुरुषं मृतं कालगतं मञ्चे समारोपितं चैलवितानीकृतं ज्ञातिसंघपरिवृतं सर्वै रुदद्भिः क्रन्दद्भिः परिदेवमानैः प्रकीर्णकेशैः पांश्ववकीर्णशिरोभिरुरांसि ताडयद्भिरुत्क्रोशद्भिः पृष्ठतोऽनुगच्छद्भिः।

mañca *m* - ложе, возвышение, помост;
caila - сделанный из ткани; *n* одежда;
√krand I U. - кричать, звучать;
pari√div I, X U. - причитать, стенать, оплакивать, кричать, плакать;
prakīrṇa (p.p. от pra√kar VI P.) спутанный (о волосах);
pāṃśu, pāṃsu *m* - земля, пыль, песок;
ava√kar (p.p. avakīrṇa) VI U. - сыпать, усыпать;

दृष्ट्वा च पुनर्बोधिसत्त्वो जानन्नेव सारथिमिदमवोचत्

किं सारथे पुरुष मञ्चपरि गृहीतो
उद्धूतकेशनख पांशु शिरे क्षिपन्ति।
परिचारयित्व विहरन्त्युरस्ताडयन्तो
नानाविलापवचनानि उदीरयन्तः॥९॥

ud√dhū I U. - встряхивать, разбрасывать, волновать;
paricāraya (caus. *от* pari√car) *buddh.* - посещать, сопровождать;
udīraya (caus. от ud√īr) - поднимать, бросать, возвышать голос, говорить;

सारथिराह

एषो हि देव पुरुषो मृतु जम्बुद्वीपे
नहि भूयु मातृपितृ द्रक्ष्यति पुत्रदारां।
अपहाय भोगगृह(मातृपितृ)मित्रज्ञातिसंघं

परलोकप्राप्तु न हि द्रक्ष्यति भूयु ज्ञातीं॥१०॥

jambudvīpa (jambu-dvīpa) *m* - центральный из семи континентов, окружающих гору Меру; мир людей;
bhoga *m* - пища; удовольствие, наслаждение; имущество, собственность;

बोधिसत्त्व आह

धिग्यौवनेन जरया समभिद्रुतेन

आरोग्य धिग्विविधव्याधिपराहतेन।

धिग्जीवितेन विदुषा नचिरस्थितेन

धिक्पण्डितस्य पुरुषस्य रतिप्रसङ्गैः॥११॥

samabhi√dru I P.- бежать, спешить, подталкивать; нападать, наступать, настигать;
parā√han II P. - убивать, поражать, разрушать, ниспровергать;

यदि जर न भवेया नैव व्याधिर्न मृत्युः

तथपि च महदुःखं पञ्चस्कन्धं धरन्तो।

किं पुन जरव्याधिर्मृत्यु नित्यानुबद्धाः

साधु प्रतिनिवर्त्या चिन्तयिष्ये प्रमोक्षम्॥१२॥

skandha *m* – плечо; ствол дерева, раздел, глава; масса, большое количество; пять составных элементов бытия, пять причинно обусловленных компонентов всего сущего: rūpa *n* – внешность, форма, облик, характер; vedanā *f* - чувство, ощущение; saṃjñā *f* - представление, мысленный образ, восприятие, обозначение; saṃskāra *m* - совокупность мысленных построений, сочетание дхарм, vijñāna *n* - сознание, познание, мудрость, способность познавать;
pramokṣa *m* - освобождение; окончательное спасение;

अथ खलु भिक्षवो बोधिसत्त्वः प्रतिनिवर्त्य तं रथवरं पुनरपि पुरं प्राविक्षत्॥

इति हि भिक्षवो बोधिसत्त्वस्यापरेण कालसमयेनोत्तरेण नगरद्वारेणोद्यानभूमिमभिनिष्क्रामतस्तैरेव देवपुत्रैर्बोधिसत्त्वस्यानुभावेनैव तस्मिन्मार्गे भिक्षुरभिनिर्मितोऽभूत्।

bhikṣu *m* - нищенствующий монах, аскет, отшельник; нищий;
abhinirmā II P. - производить, делать; сочинять, творить;

अद्राक्षीद्बोधिसत्त्वस्तं भिक्षुं शान्तं दान्तं संयतं ब्रह्मचारिणमविक्षिप्तचक्षुषं युगमात्रप्रेक्षिणं प्रासादिकेनैर्यापथेन संपन्नं प्रासादिकेनाभिक्रमप्रतिक्रमेण संपन्नं प्रासादिकेनावलोकितव्यवलोकितेन प्रासादिकेन समिञ्जितप्रसारितेन प्रासादिकेन संघाटीपात्रचीवरधारणेन मार्गे स्थितम्।

√dam (IV P. dāmyati, p.p. dānta) быть кротким; *p.p.* обузданный, смиренный, смирный, терпеливый;
yugamātra (yuga-mātra) *n* - длина ярма, мера длины около четырех локтей;
prāsādika *buddh.* - красивый, привлекательный;
īryāpatha (=airyāpatha) *m* - поведение, движение;
saṃpanna (*p.p. от* saṃ√pad) - превосходный, совершенный, одаренный, полный ч.-л.;
abhikrama *m* - шаг, поступь; подход, начинание;
pratikrama *m* - обратный порядок;
avalokita *n buddh.* - взгляд, взгляд вперед;
vyavalokita *n buddh.* -пристальный взгляд, взгляд по сторонам;
samiñjita (saṃmiñjita) *n buddh.* - сгибание, втягивание;
prasārita *n buddh.* - вытягивание, растягивание; разгибание;
saṃghāṭī *f buddh.* - набедренная повязка;
pātra *n* - сосуд, чаша;
cīvara *n* - монашеское одеяние; лохмотья нищего;

दृष्ट्वा च पुनर्बोधिसत्त्वो जानन्नेव सारथिमिदमवोचत्

किं सारथे पुरुष शान्तप्रशान्तचित्तो
नोत्क्षिप्तचक्षु व्रजते युगमात्रदर्शी।
काषायवस्त्रवसनो सुप्रशान्तचारी
पात्रं गृहीत्व न च उद्धतु उन्नतो वा॥१३॥

uddhata (p.p. *om* ud√dhan) возбужденный, взволнованный; громкий; заносчивый, высокомерный;
unnata (p.p. *om* un√nam) - благородный; возвышенный; *buddh.* заносчивый, высокомерный, надменный;

सारथिराह

एषो हि देव पुरुषो इति भिक्षुनामा
अपहाय कामरतयः सुविनीतचारी।
प्रवज्यप्राप्तु शममात्मन एषमाणो
संरागद्वेषविगतोऽन्वेति पिण्डचर्या॥१४॥

vinīta (p.p. *om* vi√nī) - обученный, вежливый, воспитанный, благонравный;
piṇḍa *m* - пища, еда, пропитание;

बोधिसत्त्व आह

साधू सुभाषितमिदं मम रोचते च
प्रव्रज्य नाम विदुभिः सततं प्रशस्ता।
हितमात्मनश्च परसत्त्वहितं च यत्र
सुखजीवितं सुमधुरं अमृतं फलं च॥१५॥

pravrajya *n* - уход, странствие; уход из дома в нищенствующие монахи;
vidu *buddh.* - мудрый, разумный; умелый, искусный;